पढ़ने–लिखने में मौखिक भाषा की भूमिका

मीनू पालीवाल

हम यह जानते हैं कि भाषा मूलतः मौखिक ही होती है तब भी हम मौखिक भाषा को कक्षाओं में जगह नहीं देते। मौखिक भाषा और पढ़ना-लिखना सीखने में क्या सम्बन्ध है, इसकी पड़ताल करने के लिए कुछ गतिविधियाँ शिक्षकों के साथ की गईं। शिक्षकों का इन गतिविधियों को करने का अनुभव व विश्लेषण दर्शाता है कि मौखिक भाषा का विकास पढ़ने-लिखने की क्षमता को बहुत प्रभावित करता है। -सं.

बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने के दौरान उनकी मौखिक भाषाई क्षमता को अकसर नज़रअन्दाज़ किया जाता है।

बहुत-से शैक्षिक दस्तावेज़ों में यह बात दर्ज है कि पढ़ना सिखाने से पहले मौखिक भाषा का विकास किया जाना चाहिए। कृष्ण कुमार ने भी *बच्चे की भाषा और अध्यापक* में लिखा है कि जब बच्चा स्वयं के बारे में, अपने आसपास के बारे में आत्मविश्वास से बात करने लग जाए तब समझिए कि वो पढ़ना-लिखना सीखने के लिए तैयार है।

मौखिक भाषा का इतना महत्त्व क्यों?

मौखिक भाषा पढ़ना, लिखना, तर्कशीलता, आदि जैसे सभी कौशलों का आधार है। नीचे दिए वाक्य पढ़ें और सोचें कि ये किस भाषा में लिखे हैं?

Main bazaar ja raha hoon.
आई एम गोइंग टू मार्केट।

जो भी निर्णय आपने लिया, ज़रा ठहरकर सोचें कि यह निर्णय आपने किस आधार पर लिया? यह निर्णय आप भाषा की प्रकृति के आधार पर ले रहे होंगे जिसके अनुसार हम समझते हैं कि भाषा मूलतः मौखिक होती है और लिपि भाषा को स्थाई करने का मात्र एक साधन है। भाषा के द्वारा ही हम स्वयं को और दुनिया को समझते हैं। कोई भी भाषा किसी भी लिपि में लिखी जा सकती है।

इस जानकारी के बावजूद, कि भाषा मूलतः मौखिक ही है, मौखिक भाषा को स्कूलों में जगह नहीं दी जाती। यह माना जाता है कि सुनना और बोलना बच्चे घर से सीखकर ही आते हैं और शायद यह भी कि इन कौशलों का पढ़ने और लिखने से कोई सम्बन्ध नहीं है। मौखिक भाषा पढ़ने को, पढ़कर अर्थ प्राप्त करने को

बच्चे :

- विविध उद्देश्यों के लिए अपनी भाषा अथवा / और स्कूल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए बातचीत करते हैं, जैसे– कविता, कहानी सुनाना, जानकारी के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना।
- सुनी सामग्री (कहानी, कविता आदि) के बारे में बातचीत करते हैं, अपनी राय देते हैं, प्रश्न पूछते हैं।
- भाषा में निहित ध्वनियों और शब्दों के साथ खेलने का आनन्द लेते हैं, जैसे– इन्ना, बिन्ना, तिन्ना।

बहुत प्रभावित करती है। एक कार्यशाला में की गई कुछ गतिविधियों में हमने यह अनुभव किया कि हमारी सुनने और बोलने की क्षमता पढ़ने और लिखने को कैसे प्रभावित करती है।

इन गतिविधियों में हमने तीन टेक्स्ट इस्तेमाल किए। (1) अवधी लघुकथा (कहानी स्तर), (2) विभिन्न भाषाओं में लिखा एक पर्चा (वाक्य स्तर), और (3) लेखन में शब्द स्तर की गतिविधि इस्तेमाल की गई।

लघुकथा का टेक्स्ट नीचे दिया गया है। सभी शिक्षकों को पहले इसे व्यक्तिगत रूप से मन में पढ़ने को कहा गया। इसके बाद एक शिक्षक से कहा गया कि वे इसे बोलकर पढ़ें। यह काम अलग-अलग शिक्षक समूहों के साथ किया गया और एक समूह में लगभग 30 शिक्षक थे।

शिक्षकों के द्वारा पढ़े जाने पर अवलोकन

नीचे कहानी में कुछ शब्दों को चिह्नांकित किया गया है। उन शब्दों को पढ़ने में बहुत-से शिक्षकों को परेशानी हुई। यह परेशानी क्यों हुई? शायद आप इस निष्कर्ष पर पहुँच ही गए होंगे कि हम इस तरह नहीं बोलते, इसलिए इन शब्दों को पढ़ने में परेशानी हुई। पर सिर्फ़ इतना कहना ही काफ़ी नहीं है। इसे और बारीक़ी से देखने की ज़रूरत है ताकि बच्चों को पढ़ना सिखाते वक़्त हम ज़्यादा सचेत रहें।

- इस भाषा में 'ऐ' और 'औ' की मात्रा का ज़्यादा इस्तेमाल होता है। इसे चेक करने के लिए आप ऊपर वाले अनुच्छेद और इस कहानी में मात्राओं की संख्या गिन सकते हैं।
- 'हमहूँ' और 'हयं' में अन्त में चन्द्रबिन्दु और अं की बिन्दी का उच्चारण करना आसान नहीं था। कई बार इसका उच्चारण किया ही नहीं गया।
- "ताईं तौ ओहके" वाक्य के इस हिस्से को पढ़ने में बहुत-से शिक्षकों के प्रवाह में कमी आई, और 'ताईं' शब्द में बिन्दी का उच्चारण किसी ने भी नहीं किया।
- कहानी में 'यक' शब्द का प्रयोग है। इस क्षेत्र में 'एक' शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। जब मैंने इस बात पर प्रतिभागियों का ध्यान दिलाया तब एक शिक्षिका ने कहा कि वो 'यक' को अब तक 'एक' ही पढ़ रही थीं। उनका

जी सरकार ! (अवधी लघुकथा)

यक सेठ कै खाना बनावै वाला यक भंडारी रहा। ऊ सेठ कै बज्र चापलूस रहा। यक दिन सेठ कहिन– "भंडारी, बैगन से बढ़िया कौनौ तरकारी नाहीं।"

भंडारी कहिस– "जी सरकार, यही के ताईं तो ओहके सर पै भगवान ताज धइ दिहिन।"

यक रोज सेठ हचकके बैगन कै सब्जी खाइन अउ पेट खराब होइगा। अगले दिन कहिन– "भंडारी, बैगन- भांटा से खराब कौनौ तरकारी नाहीं।"

भंडारी कहिस– "जी सरकार, यहिमा कोनौ गुनै नाहीं हुअत। यहीसे तौ बंगाली लोग यहिका बेगुन कहत हयं।"

सेठ कहिन– "वहि रोज तौ बैगन कै बड़ा गुन गावत रहेव। आज अस कहत अहौ?"

भंडारी कहिस – "जी सरकार, वहि रोज आप बैगन कै तारीफ किहिन तौ हमहूँ किहेन। आज आप खराब कहत अहैं तौ हमहूँ खराब कहत अहन। हम आपकै नौकर हन, बैगन कै नौकर थोड़ै हन।"

ध्यान इस बात पर गया ही नहीं कि 'यक' लिखा है 'एक' नहीं।

- "जी सरकार! वहि रोज आप बैगन कै तारीफ किहिन तौ हमहूँ किहेन" वाक्य को पढ़ते समय 'हमहूँ किहेन को 'हमहू कहे दिए" पढ़ा गया। इस तरह और भी कुछ शब्दों को शिक्षकों के द्वारा पढ़ने में बदला गया।
- 'वहि' शब्द में शिक्षकों से पूछा गया कि जब एक शिक्षक साथी ने इस कहानी को बोलकर पढ़ा तो कौन-सा स्वर इस्तेमाल किया बड़ा या छोटा? इस प्रश्न का उत्तर नहीं आया। यह अजीब बात है कि बच्चों का हर स्वर (उच्चारण) सुधारने की प्रक्रिया हमेशा करते रहने के बावजूद, यहाँ पर समूह से इस प्रश्न का उत्तर नहीं आया। शायद वे भी अर्थ / कहानी का मज़ा लेने में खो गए थे, जिस बात की आज़ादी अनजाने में बच्चों को नहीं दी जाती क्योंकि वहाँ यह सोच हावी हो जाती है कि ठीक से उच्चारण नहीं करेंगे तो बच्चे समझ नहीं पाएँगे। परन्तु 'वहि' में छोटा स्वर लिखे होने के बावजूद बड़ा स्वर पढ़ा गया था क्योंकि हिन्दी में 'वही' शब्द उपयोग किया जाता है।

मौन वाचन के बाद शिक्षकों से पूछा गया :

सहजकर्ता : "क्या कहानी एक ही बार में पढ़कर समझ आ गई या 3-4 बार पढ़ना पड़ा?"

ज़्यादातर शिक्षक : "एक बार में समझ आ गई।"

सहजकर्ता : "क्या मन में पढ़ते समय भी आपको कुछ शब्दों को पढ़ने में परेशानी हुई?"

ज़्यादातर शिक्षक : "हाँ!"

सहजकर्ता : "क्या जिन शब्दों को पढ़ने में परेशानी हुई उनकी वजह से आप दोहरा-दोहरा कर हर वाक्य पढ़ रहे थे या एक हिस्से का पूरा अर्थ समझने के कारण आपको दोबारा या उच्चारण सुधार के लिए नहीं पढ़ना पड़ा?"

ज़्यादातर शिक्षक : "हर जगह दोहराव की ज़रूरत नहीं पड़ी।"

सहजकर्ता : "उच्चारण में कई जगह परेशानी होने के बावजूद आपको यह कहानी समझ में आ गई। इसका मतलब इस कहानी में उच्चारण का समझ में कितना प्रतिशत योगदान रहा?"

एक शिक्षक का पहला उत्तर : "50 प्रतिशत।"

सहजकर्ता : "आपको नहीं लगता यदि सच में उच्चारण का समझ में 50 प्रतिशत महत्त्व होता तो आपको एक बार में कहानी समझ नहीं आती?"

कोई जवाब नहीं आया।

वही प्रश्न दोबारा पूछा गया : "उच्चारण में कई जगह परेशानी होने के बावजूद आपको यह कहानी समझ में आ गई। इसका मतलब उच्चारण का कहानी समझने में कितना प्रतिशत योगदान रहा होगा?"

"20 से 25 प्रतिशत" (यही उत्तर लगभग 5 समूहों में आया। एक समूह में 30 शिक्षक थे)।

उच्चारण की इतनी परेशानी के बाद भी शिक्षक समूह एक बार में ही कहानी समझ गए, लेकिन कक्षा में पढ़ना सुधारने के लिए बस उच्चारण पर ही काम किया जाता है। यह कम ही देखने में मिलता है कि बच्चे के पढ़ लेने के बाद यह पूछा जाए कि बताओ पढ़े गए अनुच्छेद में तुम्हें क्या समझ आया या जो पढ़ा उसे अपने शब्दों में बताओ।

जैसा कि हमने देखा, शिक्षकों को अवधी लघुकथा को पढ़ने में ज़्यादा परेशानी नहीं आई, हालाँकि उच्चारण की कुछ ग़लतियाँ सभी शिक्षकों के पढ़ने में थीं। उच्चारण का पढ़ने की

समझ से कोई ख़ास सम्बन्ध नहीं है, यह पुख़्ता करने के लिए एक अन्य पर्चा इस्तेमाल किया गया। (ऊपर दिया गया चित्र देखें।)

शिक्षकों से 3 भाषाओं में लिखे वाक्य बोलकर पढ़ने को कहा गया। इसमें हर शिक्षक ने उच्चारण की ग़लती की। पढ़ने के फ़्लो में भी कुछ पैटर्न देखने को मिले। मसलन, किसी शब्द को पढ़ने के लिए थोड़ा ज़्यादा समय लगना, कुछ शब्दों को बदल देना, कहीं-कहीं वाक्य को सिर्फ़ डिकोडिंग के आधार पर शब्द-दर-शब्द बिलकुल वैसे ही पढ़ना जैसे कक्षा में कुछ बच्चे पढ़ते हैं।

इस पर्चे को पढ़ने के बाद नीचे दिए प्रश्नों पर शिक्षकों से चिन्तन करने के लिए कहा गया :

- किस भाषा को पढ़ने में आपको सबसे ज़्यादा परेशानी हुई? और क्यों?
- क्या ऐसी भाषा को पढ़ने में परेशानी हुई जहाँ आप सारे वर्ण और मात्रा जानते थे? और क्यों हुई?
- हिन्दी के अलावा और किस भाषा को पढ़ने में आपको तुलनात्मक रूप से आसानी हुई?
- किन शब्दों को पढ़ने में ज़्यादा परेशानी हुई?
- क्या अब वो शब्द हम एकदम सही पढ़ सकते हैं?
- क्या आप पूरे आत्मविश्वास से कह सकते हैं कि एमिटंडि शब्द में आप 'ड' वर्ण में छोटा स्वर प्रयुक्त कर पाए?
- क्या पढ़ने के दौरान आपने कुछ शब्दों को बदला?

इन प्रश्नों पर प्रतिक्रिया थी कि तमिल और तेलुगु पढ़ने में सबसे ज़्यादा परेशानी आई। अक्षर-मात्रा से तो हम परिचित हैं, परन्तु इस भाषा से नहीं। यहाँ प्रश्न था कि भाषा से परिचित होने की क्या ज़रूरत है? इन अक्षर-मात्राओं से एक लम्बे समय से परिचित भी हैं फिर इस तरह की ग़लतियाँ क्यों हुईं?

शिक्षकों ने तब कहा कि ये शब्द हम इसलिए नहीं पढ़ पाए क्योंकि हम इन शब्दों को बोलते नहीं हैं। पढ़ने में कुछ शब्दों को बदलकर भी पढ़ा गया। इसी तरह और भी बहुत-से शब्दों को ग़लत पढ़ा गया।

लग - लागा, पाम - नाम, किदें - किंदे, कौबगे - कौबेके, तिम्रो - निमरो (नेपाली)

आपले नाव काय आहे; काय - काहे (मराठी)

पुणि देखा हेब; हेब - हब (ओडिया)

माने, पढ़ना केवल अक्षर-मात्रा जोड़कर उच्चारित करना नहीं होता। यदि ऐसा होता तो हम सब वयस्कों से इस पर्चे को पढ़ने में इतनी सारी ग़लतियाँ नहीं होतीं।

लेकिन ग़लत पढ़ने की क्या-क्या वजहें हो सकती हैं? क्या ग़लती की वजह अलग-अलग होगी तो निराकरण के तरीक़े भी अलग होंगे?

मौखिक भाषा की वजह से किन्हीं शब्दों को पढ़ने में परेशानी आती है तो फिर निराकरण क्या होगा?

आमतौर पर हर उच्चारण की ग़लती के लिए अक्षर-मात्रा ध्यान से देखने को कहा जाता है या पढ़कर बता दिया जाता है। बच्चों के पढ़ने में ग़लती के बहुत-से कारण हो सकते हैं। मसलन, अनुमान में ग़लती, पूर्व-क्षमताएँ और पूर्व-अनुभव, ग्राफ़िक समानता (शब्दों का एक जैसा दिखना जैसे– बाहर-बारह, घर-मर, मई-भाई), मौखिक भाषा का प्रभाव (यक-एक, गिलहरी-गिलेरी), कुछ ख़ास वर्णों के उच्चारण में परेशानी (श्र, ष, श, व, ब; आशीर्वाद, आश्रम, आश्चर्य, आदि।

जब वजह अलग-अलग हैं तो उनपर काम करने के तरीक़े भी अलग ही होने चाहिए। ये तरीक़े / उपाय इस बात की रोशनी में होंगे कि पढ़ने का उद्देश्य ही अर्थ प्राप्त करना है। जैसे अनुमान में ग़लती पर हम उस स्किल पर काम करेंगे, यानी हम बच्चे को आधा वाक्य बोलकर बताएँ और उससे पूछें कि इस वाक्य में आगे क्या आ सकता है?

रमा ने कुत्ते के पैर से घाव साफ़ किया और ..... ('पट्टी बाँधी' लिखे हुए हिस्से को उँगली से छिपा दें)।

दूसरा, उनके साथ ज़्यादा-से-ज़्यादा मौखिक भाषा पर काम करना, कहानियाँ-कविताएँ, विवरण सुनना, अधूरी कहानी पूरी करवाना, कविताएँ बनाना, आदि कई अभ्यास हो सकते हैं।

मौखिक भाषा के कारण यदि परेशानी हो रही है तो इस बात पर ग़ौर करें कि बच्चा उस शब्द का अर्थ क्या समझ रहा है। जैसे– तैरना को तेहेरना, बहुत को बोहोत, बहन को बेहेन पढ़ना, आदि। आप देख सकते हैं कि इन उदाहरणों में अर्थ नहीं बदल रहा है, इसलिए हमें ज़्यादा परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। जितना ज़्यादा हम बच्चों से बात करेंगे और बच्चों को उन शब्दों को सुनने का मौक़ा देंगे जिनका उच्चारण वे (बच्चे) लिखे हुए से अलग कर रहे हैं, आप पाएँगे कि एक समय के बाद बच्चे आपके उच्चारण को सुनकर वैसा ही बोलने लग जाएँगे। मौखिक भाषा की वजह से होने वाली ग़लती असल में ग़लती है ही नहीं, क्योंकि बच्चे के क्षेत्र में वही बोला जाता है। इसपर काम करना कुछ समय की माँग करता है। कोई शब्द पूरी तरह ग़लत पढ़ा गया और यदि वह शब्द उस पाठ / वाक्य का अर्थ प्राप्त करने के लिए ज़रूरी है, तो सही उच्चारित करके बताया भी जा सकता है और ऐसे शब्द को कक्षा की 'शब्द दीवार' का हिस्सा भी बनाया जा सकता है। बच्चे के क्षेत्र में उस शब्द के लिए कौन-सा शब्द इस्तेमाल किया जाता है, यह पूछकर उसकी भाषा को भी कक्षा में स्थान दिया जा सकता है।

मौखिक भाषा और पढ़ने का लिखने पर प्रभाव

लेखन ठीक करने के लिए भी सिर्फ़ उच्चारण पर ही पूरी मेहनत की जाती है। इस खण्ड में इन 6 शब्दों का डिक्टेशन दिया गया :

1. समूहीकरण
2. व्याख्यात्मक
3. सार्वभौमिक
4. कैप्शनिंग
5. इंपॉर्टेंट
6. सॉफ्टवेयर

सहजकर्ता : "क्या समूहीकरण लिखते वक़्त आपको उच्चारण ध्यान से सुनना पड़ा या बोलकर देखना पड़ा कि 'म' में बड़ा 'ऊ' और 'ह' में छोटी 'इ' का उच्चारण है?"

शिक्षक समूह : "नहीं!"

सहजकर्ता : "फिर आपने यह शब्द सही कैसे लिख लिया?"

शिक्षक समूह : "इस शब्द को बहुत बार सुना है।"

सहजकर्ता : "क्या आपको इंपॉर्टेंट लिखने में उच्चारण की मदद या लिखने में थोड़ा ज़्यादा समय लगा?"

शिक्षक समूह : "हाँ!"

सहजकर्ता : "क्या आपके अगल-बग़ल में बैठे शिक्षकों ने इंपॉर्टेंट की वर्तनी आपके जैसी ही लिखी है?"

शिक्षक समूह : "थोड़ा अन्तर है।"

सहजकर्ता : "क्या यही अन्तर समूहीकरण लिखने में भी है?"

शिक्षक समूह : "नहीं।"

सहजकर्ता : "आपने समूहीकरण और इंपॉर्टेंट दोनों शब्द ही काफ़ी बार सुने हैं परन्तु एक शब्द लिखने में आपको समय कम लगा बनिस्बत दूसरे के। ऐसा क्यों?"

शिक्षक समूह : "इंपॉर्टेंट शब्द हमने हिन्दी में लिखा नहीं देखा।"

सहजकर्ता : "इसका मतलब आपने समूहीकरण बार-बार लिखा देखा है, इसलिए आप यह शब्द सही लिख पाए न कि उसके सटीक उच्चारण के कारण।"

डिक्टेशन में सार्वभौमिक, व्याख्यात्मक शब्द को दोहराना पड़ा क्योंकि समूह उन शब्दों को सुन नहीं पाया। कुछ शिक्षकों ने इन शब्दों को दोबारा बोलने का आग्रह किया, और 'कैप्शनिंग' शब्द तो हर समूह में 3 से 4 बार दोहराना पड़ा।

सहजकर्ता : "कैप्शनिंग शब्द को सुनकर लिखने के लिए हमें 3 से 4 बार दोहराव की ज़रूरत पड़ी, सुनने की क्षमता तो एक-सी ही थी, फिर ऐसा क्यों हुआ?"

शिक्षक समूह : "यह शब्द हमने पहले नहीं सुना है। इसके अर्थ से भी हम अपरिचित हैं।"

इसका मतलब हमें क्या सुनाई देता है वह इस बात पर भी निर्भर करता है कि क्या पहले हमने उस शब्द को सुना है, क्या वह हमारे बोलचाल का हिस्सा है, और क्या हम उसका अर्थ जानते हैं?

कक्षा में बच्चों से भी इसी तरह की पढ़ने और लिखने की ग़लतियाँ होती हैं, जैसी हम वयस्कों से हुईं। इन्हें सीखने के चरणों की तरह

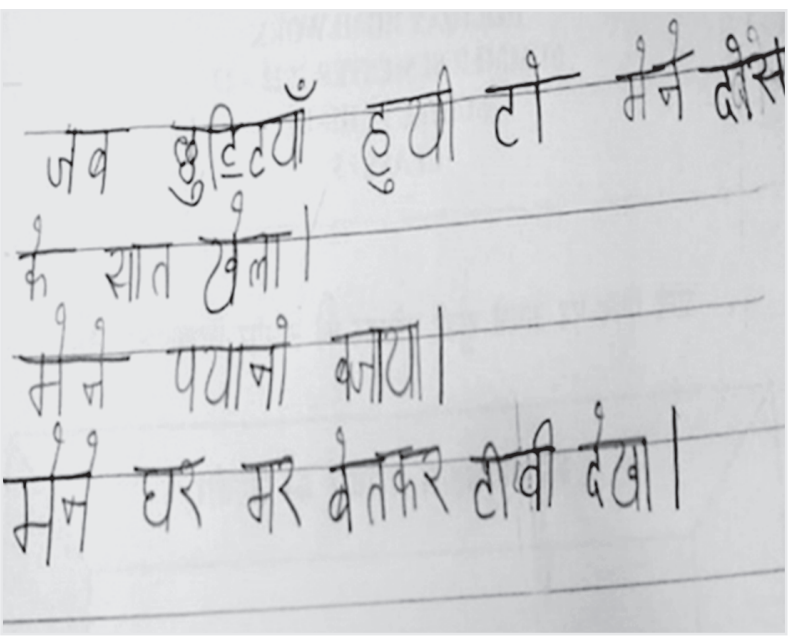

देखा जाना चाहिए। ज़रा कक्षा 2 के बच्चे के लेखन को देखिए। कक्षा 2 में लेखन सम्बन्धित सीखने का प्रतिफल व्याकरणिक शुद्धता की बात नहीं करता, बल्कि अपने मन के विचारों को स्व-वर्तनी की मदद से भी लिखने को स्वीकार करता है। इस उदाहरण में आप मौखिक भाषा का लेखन पर प्रभाव भी देख सकते हैं।

सरकारी स्कूल में बच्चे मानक हिन्दी बोलने के आग्रह की वजह से अपनी भाषा के प्रति हीन भावना महसूस करते हैं। *नई शिक्षा नीति 2020* में भी मात्र भाषा शिक्षण की बात की गई है। अन्त में, हमें यह ध्यान रखना होगा कि हम किस उद्देश्य के लिए शिक्षा दे रहे हैं।

आखिर में, मैं 'भारतीय भाषाओं का शिक्षण- राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र' से एक महत्त्वपूर्ण विचार से अपनी बात ख़त्म करूँगी कि...

... यदि हम चाहते हैं कि ऐसा जनतंत्र पनपे जिसमें सभी की भागीदारी सम्भव हो सके तो हमें प्रत्येक बच्चे को उसकी भाषा में सुनना होगा...

मीनू पालीवाल ने अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में 6 वर्ष काम किया है। आप फ़ेलोशिप प्रोग्राम के ज़रिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़ीं। इससे पहले उन्होंने 6 वर्ष आईसीआईसीआई बैंक में काम किया। वे अपने मन में आने वाले सवालों की तलाश में शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ीं। उन्हें प्राथमिक कक्षाओं में काम करना अच्छा लगता है।

सम्पर्क : paliwal.meenu@gmail.com